परमेश्वर की कहानी
हमारी कहानी

(सवाल और जवाब में)

स्पष्ट और सरल मीडिया समूह
www.clearandsimplemedia.org

प्रस्तावना

कई सालों से, परमेश्वर के लोगों ने प्रश्नोत्तर के एक संग्रह का इस्तेमाल किया है जो नए विश्वासियों को सबसे महत्वपूर्ण सत्यों को सिखाने में मदद करता है। यह पुस्तक यीशु का पालन करने वाले लोगों की एक नई पीढ़ी के लिए इन महत्वपूर्ण सत्यों की पेशकश करेगा।

इस पुस्तक में 64 प्रश्न एवं उत्तर हैं। यह पुस्तक उन पाठकों को ध्यान में रख कर लिखा है जिनकी दूसरी भाषा अंग्रेजी के रूप में है। इसका निर्माण इस तरह से किया है कि ये अन्य भाषाओं में अनुवाद सरल बनाता है । प्रत्येक प्रश्न के बाद तुरंत एक जवाब है। प्रत्येक जवाब के बाद बाइबिल से अनुभाग है। प्रत्येक बाइबिल चयन में पुस्तक का शीर्षक शामिल है, (उदाहरण के लिए: उत्पत्ति)। पुस्तक के नाम के बाद वह अध्याय जहाँ यह चयन पाया जाता है (उदाहरण के लिए: अध्याय 2)। इसके बाद वह पद जहाँ यह चयन पाया जाता है (उदाहरण के लिए: पद 3)। तो उत्पत्ति अध्याय दो का तीन पद इस तरह दिखेगा: उत्पत्ति 2:3।

रूपांतर सौजन्य:
स्पष्ट और सरल मीडिया समूह

सलाह और संपादकीय सहायता:
विक्लिफ एसोसिएट्स (यू.के.)

अनुवादक:
www.christian-translation.com

कुछ जवाब में वाक्य खंडीकरण शामिल होंगे (उदाहरण के लिए: प्रश्न.4). विक्लिफ एसोसिएट्स (यूके) द्वारा इस्तेमाल किए गए लेखन शैली मौखिक विचारों को अलग करने और उन पाठकों को, जिनकी दूसरी भाषा अंग्रेजी है, अधिक स्पष्ट रूप से विचारों को समझाने के लिए है।

भाग एक

परमेश्वर और मनुष्य

सवाल 1 से 26

भाग दो

पाप*

सवाल 27 से 35

भाग तीन

उद्धारकर्ता* यीशु मसीह

सवाल 36 से 56

भाग चार

आशा

सवाल 57 से 64

जब आप इस चिन्ह * को देखें, तो इस चिन्ह * से लगा शब्द ये यह दर्शाता है कि यह शब्द सूचि में पाया जाता है।

भाग एक
परमेश्वर और मनुष्य

प्र.1. आपको किसने बनाया?
उ. परमेश्वर ने मुझे बनाया है।
उत्पत्ति 1: 26-27; उत्पत्ति 2:7; प्रेरितों के काम 17:26

प्र.2. परमेश्वर ने और क्या बनाया?
उ. परमेश्वर ने सब कुछ बनाया है।
उत्पत्ति 1:31; भजन संहिता 33: 6-9; कुलुस्सियों 1: 16-17।

प्र.3. परमेश्वर ने हमे और बाकी चीजों को क्यों बनाया?
उ. परमेश्वर ने हमे और बाकी चीजों को अपनी महिमा* के लिए बनाया है।
भजन संहिता 19:1; यशायाह 43:7; 1 कुरिन्थियों 10: 31

प्र.4. आप परमेश्वर को महिमा* कैसे दे सकते हैं?
उ. जब हम उनसे प्यार करते हैं और भरोसा रखते हैं तब हम परमेश्वर को महिमा* देते हैं। और जब हम वो करते हैं जो हमे कहा गया है।
मत्ती 5:16; यूहन्ना 14:21; 1 यूहन्ना 5:3

प्र.5. आपको परमेश्वर को महिमा* क्यों देना चाहिए?
उ. क्योंकि उन्होंने हमे बनाया है और हमारा ध्यान रखते हैं
भजन संहिता 145:9; 1 पतरस 5:7; प्रकाशितवाक्य 4:11

प्र.6. कितने परमेश्वर है?
उ. केवल एक ही परमेश्वर है।
व्यवस्थाविवरण 6:4; यशायाह 45:5; यिर्मयाह 10:10

प्र.7. कितने व्यक्तियों में परमेश्वर मौजूद है?
उ. परमेश्वर तीन व्यक्तियों में मौजूद है।
मत्ती 3: 16-17; यूहन्ना 5:23; यूहन्ना 10:30; यूहन्ना 15:26

प्र.8. वे कौन है?

उ. पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा*।

मत्ती 28:19; 2 कुरिन्थियों 13: 14; 1 पतरस 1:2

प्र.9. परमेश्वर क्या है?

उ. परमेश्वर आत्मा* है। उनके पास मनुष्य की तरह शरीर नहीं है।

यूहन्ना 4:24; 2 कुरिन्थियों 3:17; 1 तीमुथियुस 1:17

प्र.10. क्या परमेश्वर का कोई आरम्भ है?

उ. नहीं, परमेश्वर पहले से है और परमेश्वर हमेशा रहेगा।

निर्गमन 3:14; भजन संहिता 90;2; यशायाह 40:28

प्र.11. क्या परमेश्वर बदलते हैं?

उ. नहीं, परमेश्वर हमेशा एक सा है।

भजन संहिता 102:26-27; मलाकी 3:6; इब्रानियों 13:8

प्र.12. परमेश्वर कहाँ हैं?

उ. परमेश्वर सब जगह है।

भजन संहिता 139:7-12; यिर्मयाह 23:23-24; प्रेरितों के काम 17:27-28

प्र.13. क्या आप परमेश्वर को देख सकते हैं?

उ. नहीं, हम परमेश्वर को देख नहीं सकते, पर वो हमे हमेशा देखते हैं।

भजन संहिता 33:13-15; नीतिवचन 5:21; यूहन्ना 1:18; 1 तीमुथियुस 1:17

प्र.14. क्या परमेश्वर सब कुछ जानते हैं?

उ. हाँ, परमेश्वर सब कुछ जानते हैं। हम परमेश्वर से कुछ छिपा नहीं सकते।

1 शमूएल 2:3; नीतिवचन 15:3; इब्रानियों 4:13

प्र.15. क्या परमेश्वर सब कुछ कर सकते हैं?

उ. हाँ, परमेश्वर हर पवित्र चीज़ कर सकते हैं जो वे चाहते हैं।

यशायाह 46:9-10; दानिय्येल 4:34-35; इफिसियों 1:11

प्र.16. परमेश्वर से प्रेम, भरोसा करना और उसकी आज्ञा का पालन करना हम कहाँ से सीख सकते हैं?

उ. परमेश्वर ने अपने वचन, बाइबिल में हमे दिखाया है कि कैसे प्रेम करना और उसकी आज्ञा का पालन करना है।

भजन संहिता 119:104-105; यूहन्ना 20:30-31; 2 तीमुथियुस 3:15

प्र.17. बाइबिल आपको क्या सीखाती हैं?

उ. बाइबिल हमे परमेश्वर कि सच्चाई और यीशु मसीह के माध्यम से दुनिया को बचाने की योजना सीखाती है। और ये हमे हमारी सच्चाई सीखाती है।

भजन संहिता 119:159-160; यूहन्ना 17:17; 2 तीमुथियुस 3:14-17

प्र.18. बाइबिल को किसने लिखा है?

उ. मनुष्य जो पवित्र आत्मा* के द्वारा निर्देशित और सीखाए गए थे।

2 पतरस 1:20-21; 2 पतरस 3:15-16

प्र.19. हमारे पहले माँ बाप कौन थे?

उ. आदम और हव्वा।

उत्पत्ति 3:20; उत्पत्ति 5:1-2

प्र.20. हमारे पहले माँ बाप को परमेश्वर कैसे बनाए थे?

उ. परमेश्वर ने आदम का शरीर भूमि की मिट्टी से रचा। परमेश्वर ने हव्वा को आदम के शरीर से बनाया।

उत्पत्ति 2:7; उत्पत्ति 2:21-23; उत्पत्ति 3:19; भजन संहिता 103:14

प्र.21. परमेश्वर के बानाए हुए सृष्टि से आदम और हव्वा अलग कैसे थे?

उ. परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अपने स्वरुप के अनुसार अपने समानता में बनाया।

उत्पत्ति 1: 26-27

प्र.22. हम आदम और हव्वा में परमेश्वर की छवि कैसे देख सकते हैं?

उ. परमेश्वर ने उन्हें अपने सृष्टी पर अधिकार दिया। वे सच को समझ सकते थे। जो सही था उसे प्यार कर सकते थे। जो सुन्दर है उसकी आनंद ले सकते थे। जो परमेश्वर को भाता है वे कर सकते थे। वे परमेश्वर और एक दुसरे के साथ बात कर सकते थे।

उत्पत्ति 1: 26-27; उत्पत्ति 2: 7-9; भजन संहिता 147: 10-11; फिलिप्पियों 4: 8

प्र.23. परमेश्वर ने आदम और हव्वा को शरीर के अलावा और क्या दिया?

उ. परमेश्वर ने उन्हें कभी न मरने वाली आत्मा* दी।

उत्पत्ति 2: 7; व्यवस्थाविवरण 6: 5; सभोपदेशक 12: 7; मत्ती 16:26

प्र.24. क्या शरीर के साथ आपके पास आत्मा* भी है?

उ. हाँ, हमारे पास कभी न मरने वाली आत्मा* है।

जकर्याह 12: 1; प्रेरितों के काम 7:59; 2 कुरिन्थियों 5: 8

प्र.25. जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाया तब वे कैसे थे?

उ. परमेश्वर ने उन्हें पवित्र* और आनंदित बनाया। वे परमेश्वर के साथ उनकी बनायी हुई वाटिका में रहते थे।

उत्पत्ति 1: 26-28; उत्पत्ति 2: 15-17; उत्पत्ति 2:25; भजन संहिता 8: 4-8

प्र.26. परमेश्वर आदम और हव्वा से क्या चाहते थे?

उ. परमेश्वर चाहते थे कि वे उन पर पूरी तरह से भरोसा रखे और उनकी आज्ञा का पालन करे।

उत्पत्ति 2: 15-17; भजन 8: 4-8

भाग दो

पाप*

प्र.27. क्या आदम और हव्वा परमेश्वर की बात मानकर हमेशा के लिए पवित्र* और आनंदित रहे?

उ. नहीं, उन्होंने आज्ञा का पालन नहीं किए। वे परमेश्वर के खिलाफ पाप को चुने।

उत्पत्ति 3: 6-8

प्र.28. पाप* क्या है?

उ. पाप वो है जब हम परमेश्वर की कही हुई बात को नहीं करते है। और जब हम वो करते हैं जो परमेश्वर ने मना किया है।

रोमियो 01:32; याकूब 2: 10-11; याकूब 4:17; 1 यूहन्ना 3: 4

प्र.29. हरेक पाप* का अंजाम क्या है?

उ. हर पाप* परमेश्वर का क्रोध और सजा के हकदार हैं।

व्यवस्थाविवरण 27:26; रोमियो 01:18; रोमियो 6:23; इफिसियों 5: 6

प्र.30. हमारे पहले माँ बाप का पाप* क्या था?

उ. उन्होंने वो फल खाया जो परमेश्वर ने खाने से मना किया था।

उत्पत्ति 2: 16-17; उत्पत्ति 3: 6

प्र.31. किसने उन्हें पाप* करने के लिए लोभित किया?

उ. शैतान हव्वा को लोभित किया और वो आदम को फल दी।

उत्पत्ति 3: 1-5; यूहन्ना 8:44; 2 कुरिन्थियों 11: 3; प्रकाशितवाक्य 12: 9

प्र.32. जब हमारे पहले माँ बाप पाप किए तब इस संसार को क्या हुआ?

उ. परमेश्वर ज़मीन को श्राप दिए। और मृत्यु संसार में आई, जैसा परमेश्वर ने उन्हें चेतावनी दी थी।

उत्पत्ति 2: 15-17; उत्पत्ति 3: 16-17

प्र.33. हमारे पहले माँ बाप को क्या हुआ जब वे पाप किए?

उ. परमेश्वर ने उन्हें अदन की बाटिका में से निकाल दिया। वे अब पवित्र* और आनंदित नहीं रहे। इसके बजाय, वे पापी* - दोषी, लज्जित और डरे हुए थे।

उत्पत्ति 3: 8-13; उत्पत्ति 3: 16-19; उत्पत्ति 3:23

प्र.34. चूँकि आदम ने पाप किया, उसके पीछे जीने वालों को क्या हुआ?

उ. आदम और हव्वा के बाद पैदा होने वाला हरेक व्यक्ति पाप* में जन्मा है।

भजन संहिता 51: 5; रोमियों 5: 18-19; 1 कुरिन्थियों 15: 21-22

प्र.35. क्या परमेश्वर संसार को श्राप में छोड़ दिए? क्या उन्होंने लोगों को उनके पाप में त्याग दिया?

उ. नहीं, परमेश्वर ने उन्हें बचाने का निर्णय लिया। परमेश्वर एक उद्धारकर्ता भेजने का वादा किया।

मत्ती 1:21; यूहन्ना 3: 16-17; 1 यूहन्ना 4:14

भाग तीन
उद्धारकर्ता*: यीशु मसीह*

प्र.36. उद्धारकर्ता* कौन है?

उ. पापियों* का एकलौता उद्धारकर्ता प्रभु* यीशु मसीह ही है।

लूका 2:11; प्रेरितों के काम 4: 11-12; 1 तीमुथियुस 1:15

प्र.37. यीशु मसीह कौन है?

उ. यीशु मसीह परमेश्वर का सनातन* पुत्र है।

यूहन्ना 1: 1,14,18; यूहन्ना 3: 16,18; गलातियों 4: 4; कुलुस्सियों 1: 15-18; इब्रानियों 1: 1-3; 1 यूहन्ना 5:20

प्र.38. परमेश्वर अपने पुत्र को इस संसार में क्यों भेजे?

उ. परमेश्वर अपने पुत्र को इसलिए भेजे क्योंकि वे हम से प्यार करते हैं। उन्होंने अपने पुत्र को भेजा क्योंकि वो करुणा और कृपा* का परमेश्वर है।

भजन संहिता 103: 8-11; यूहन्ना 3: 16-17; रोमियों 5: 7-8; इफिसियों 2: 4-5; 1 यूहन्ना 4: 9-10

प्र.39. क्या यीशु मसीह परमेश्वर और मनुष्य दोनों है?

उ. हाँ, यीशु पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मनुष्य थे।

यूहन्ना 1: 1-3, 14; फिलिप्पियों 2: 5-11; कुलुस्सियों 2: 9; इब्रानियों 2: 14-18

प्र.40. उद्धारकर्ता* यीशु मसीह ने क्या काम किया?
उ. उन्होंने परमेश्वर की हर बात मानी और वो पापियों की सज़ा भुगते।
रोमियो 8:3-4; फिलिप्पियों 2:7-8; इब्रियों 4:15; इब्रानियों 9:14-15

प्र.41. यीशु क्यों मरा?
उ. यीशु पापी* लोगों के स्थान पर मर के परमेश्वर का क्रोध को दूर किया।
मरकुस 10:45; 2 कुरिन्थियों 5: 19-21; गलातियों 3:13

प्र.42. परमेश्वर का सनातन* पुत्र, पापी* लोगों के स्थान पर कैसे पीड़ित हो सकता है?
उ. यीशु, परमेश्वर का पुत्र, एक इंसान बना।
यूहन्ना 1:14; गलातियों 4: 4,5; कुलुस्सियों 2:9

प्र.43. परमेश्वर का पुत्र एक इंसान कैसे बना?
उ. वह पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ-धारण* किए और कुंवारी* मरियम से जन्मे।
यशायाह 7:14; मत्ती 1: 18-21

प्र.44. यीशु मसीह किस प्रकार का जीवन इस संसार में जिए?
उ. एक साधारण, आदरणीय* और विनम्र जीवन।
मत्ती 8:20; मत्ती 11: 28-30; लूका 4: 18-19; 2 कुरिन्थियों 8: 9; 2 कुरिन्थियों 10: 1

प्र.45. क्या प्रभु* यीशु मसीह कभी पाप* किए?
उ. नहीं, वह पवित्र और निष्कलंक थे।
यूहन्ना 8:29; 2 कुरिन्थियों 5:21; इब्रानियों 7:26; 1 पतरस 2: 21-23

प्र.46. यीशु मसीह किस प्रकार की मृत्यु से मरे?
उ. मसीह क्रूस* पर मरे।
लूका 23:33; गलातियों 3:13; फिलिप्पियों 2: 8

प्र.47. क्या मसीह मरने के बाद कब्र में ही रहे?
उ. नहीं, मसीह तीसरे दिन मृत्युकों में से जी उठे।
मत्ती 28: 5-7; लूका 24: 5-8; रोमियो 4:25; 1 कुरिन्थियों 15: 3,4

प्र.48. परमेश्वर किन लोगों को उनके पाप के परिणाम से बचाएगा?

उ. परमेश्वर उन्हें बचाएँगे जो पाप* से पश्चताप* करेंगे। और जो प्रभु* यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे।

मरकुस 1: 14,15; यूहन्ना 3: 16-18; प्रेरितों के काम 20:21

प्र.49. पश्चताप* करने का मतलब क्या है?

उ. पश्चाताप* करने का मतलब है अपने पापों* के लिए क्षमा माँगना। और अपने पापों* से मन फिराना क्योंकि ये परमेश्वर को अपमानित करता है।

लूका 19: 8-10; 2 कुरिन्थियों 7: 9-10; 1 थिस्सलुनीकियों 1: 9-10

प्र.50. मसीह पर विश्वास रखना या श्रधा* रखने का क्या मतलब है?

उ. मसीह पर श्रधा* रखने का मतलब है यीशु में विश्वास रखना। हमारे बचाव* के लिए हम सिर्फ उन्ही पर भरोसा* रख सकते हैं।

यूहन्ना 14: 6; प्रेरितों के काम 4:12; 1 तीमुथियुस 2: 5; 1 यूहन्ना 5: 11-12

प्र.51. क्या आप अपने शक्ति से पश्चाताप* करके और मसीह पर विश्वास कर सकते हैं?

उ. नहीं, हमे पवित्र आत्मा* की सहायता की जरुरत है।

यिर्मयाह 13:23; यूहन्ना 3: 5-6; यूहन्ना 6:44; 1 कुरिन्थियों 2:14

प्र.52. लोग मसीह के सच्चाई कहाँ से सुन सकते हैं?

उ. सुसमाचार* में, अच्छी ख़बर जो सभी लोगों के लिए एक उद्धारकर्ता* प्रदान करती है।

मरकुस 1: 1; प्रेरितों के काम 15: 7; रोमियों 1: 16-17

प्र.53. यीशु मसीह में विश्वास करने पर हमे कौन सी आशीर्षें* मिलती है?

उ. परमेश्वर हमे माफ़ करते हैं और हमे धर्मी ठहराते हैं।

परमेश्वर हमे अपने प्रिय बच्चे के रूप में हमे अपने परिवार में ग्रहण करते हैं।

परमेश्वर हमे अपने हिर्दय में और व्यवहार में पवित्र बनाता है।

परमेश्वर हमे पुनरुत्थान* पर शरीर और आत्मा* में सिद्ध बनाते हैं।

रोमियों 5:18; गलातियों 4: 4-6; इफिसियों 1: 5; इब्रानियों 10: 10-14; 1 यूहन्ना 3: 2

प्र.54. क्या परमेश्वर हमे ये आशीर्षें* इसलिए देता है क्योंकि हमने ये अर्जित किए हैं?

उ. नहीं, अपने अनुग्रह* की वजह से परमेश्वर हमे ये आशीष* देते हैं। हम इसके लायक नहीं और न हम इन्हें कमा सकते हैं।

यशायाह 64: 6; इफिसियों 2: 8-9; तीतुस 3: 4-7

प्र.55. क्या परमेश्वर अपनी आशीष* उनसे कभी हटायेंगे जो सच्चा पश्चाताप* करके विश्वास करते हैं?

उ. नहीं, यीशु उन्हें कभी नहीं छोड़ेगा जो स्वयं के बचाव* के लिए उन पर भरोसा* करते हैं।

यूहन्ना 10: 27-30; रोमियो 8: 38-39; फिलिप्पियों 1: 6; 1 पतरस 1: 3-5

प्र.56. परमेश्वर का अनुग्रह* क्या है?

उ. परमेश्वर का अनुग्रह* हमारे लिए उनका प्यार और भलाई है जिसके हम लायक नहीं।

निर्गमन 34: 6; इफिसियों 1: 7-8; 2 कुरिन्थियों 8: 9

भाग चार
आशा

प्र.57. मसीह अभी कहाँ है?

उ. मसीह अभी परमेश्वर पिता के दाहिनी ओर, स्वर्ग* में है।

मरकुस 16:19; प्रेरितों के काम 5:31**;** रोमियो 8:34

प्र.58. क्या मसीह फिर से इस दुनिया में आएँगे?

उ. हाँ, वो आखरी दिन में दुनिया के सभी लोगों का न्याय करने आएँगे। और उन्हें बचाएँगे जो उनकी राह देख रहे हैं।

मत्ती 25: 31-32; 2 थिस्सलुनीकियों 1: 7-9; 2 तीमुथियुस 4: 1; इब्रानियों 9:28

प्र.59. धर्मियों* को मृत्यु पर क्या होता है?

उ. धर्मियों* का शरीर मिट्टी में चला जाता है। उनकी आत्मा* प्रभु* के पास रहने के लिए चली जाती है।

उत्पत्ति 3:19; सभोपदेशक 12: 7; 2 कुरिन्थियों 5: 8

प्र.60. दुष्ट लोगों को मृत्यु पर क्या होता है?

उ. दुष्ट का शरीर मिट्टी में चला जाता है। उनकी आत्मा* सज़ा भुगदती है। परमेश्वर उन्हें वो दिन के लिए रखते हैं जब वो न्याय करने के लिए आएँगे।

लूका 16: 23-24; यूहन्ना 5: 28-29; 2 पतरस 2: 9

प्र.61. क्या मृत फिर से जीवित उठेंगे?

उ. हाँ, सारे मृत जी उठेंगे जब मसीह फिर से आएँगे।

दानिय्येल 12: 2; यूहन्ना 5: 28-29; प्रेरितों के काम 24:14-15

प्र.62. मसीह जब न्याय के दिन आएँगे तो दुष्ट लोगों को क्या होगा?

उ. परमेश्वर उन्हें नरक में कभी न ख़तम होने वाली विनाश से सजा देंगे। वे हमेशा के लिए परमेश्वर की उपस्थिति से बाहर फेंकें जायेंगे।

मत्ती 25: 41,46; मरकुस 9: 47,48; लूका 12: 5; लूका 16: 23-26; 2 थिस्सलुनीकियों 1: 9; प्रकाशितवाक्य 20: 12-15

प्र.63. धर्मी* लोगों के साथ क्या होगा?

उ. धर्मी* लोग परमेश्वर के साथ आनंदित रहेंगे। वे एक नये स्वर्ग* और नए पृथ्वी में हमेशा के लिए जीवित रहेंगे।

यशायाह 66:22-23; 2 पतरस 3:13; प्रकाशितवाक्य 21:2-4

प्र.64. नये स्वर्ग* और नई पृथ्वी कैसी होगी?

उ. नये स्वर्ग* और नई पृथ्वी में हम परमेश्वर के साथ रहेंगे। हम कभी पाप नहीं करेंगे। हम कभी मरेंगे नहीं। कोई श्राप नहीं होगा। कोई दुःख और दर्द नहीं होगा। हम कभी दोषी, डरे हुए या लज्जित नहीं होंगे। हम परमेश्वर से आई हुई आनंद को जानेंगे।

इब्रानियों 12: 22-23; यहूदा 24; प्रकाशितवाक्य 21: 1-5; प्रकाशितवाक्य 22: 1-4।

शब्द सूचि

शब्द	स्पष्टीकरण
लेपालक	लेपालक कानूनी कार्य है जिससे एक व्यक्ति को एक परिवार में शामिल किया जाता है। उस व्यक्ति को अपने बच्चे में से एक के रूप में पाला जाता है। इससे पहले, हम परमेश्वर के लिए अजनबी थे और परमेश्वर के दुश्मन थे। लेकिन अब परमेश्वर ने हमें उनके खुद के प्रिय बच्चों के रूप में बुलाया है।
स्वर्गदूत	स्वर्गदूत परमेश्वर की ओर से उनका संदेश लाने वाले सेवक हैं। स्वर्गदूत परमेश्वर के बारे में अच्छी बातें कहते हैं। स्वर्गदूत वो करते हैं जो परमेश्वर चाहते हैं। स्वर्गदूत उन लोगों के लिए भला करते हैं जो परमेश्वर के परिवार में हैं। बुरे दूत शैतान* के लिए काम करते हैं।
विश्वासी	विश्वासी एक व्यक्ति है जो मसीह को जानता है और उस पर भरोसा करता है।
आशीषें	आशीषें वो अच्छी बातें है जो परमेश्वर हमारे लिए करता है। हम जब परमेश्वर से आशीष मांगते हैं, तब हम यह मांगते हैं कि वो हमारी मदद करें और हमारा भला करें।
गर्भ-धारण	एक बच्चे के बनने का क्षण, जब एक महिला के शरीर में एक नया जीवन शुरू होता है।
क्रूस	एक क्रूस लकड़ी के दो टुकड़ों का जोड़ है। यीशु के समय, लोग अपराधियों को मारने के लिए क्रूस पर चढ़ाते थे। यीशु क्रूस पर मरे।
श्राप	एक शक्तिशाली शब्द जो किसी पर नुकसान या सजा ला सकता है।
इब्लीस	शैतान* इब्लीस का दूसरा नाम है। शैतान* बुरे दूतों में सबसे दुष्ट है [स्वर्गदूत देखें]।
सनातन	चीज़ें जो हमेशा से हैं या हमेशा के लिए रहेंगी, सनातन हैं। जिसका कोई शुरुआत या अंत नहीं होता।
विश्वास (श्रद्धा)	विश्वास का मतलब है किसी पर या किसी में श्रद्धा रखना। परमेश्वर में भरोसा या ईमान रखना। यह मानना कि परमेश्वर वास्तविक में हैं, भले ही हम उसे देख नहीं सकते हैं।
क्षमा करना	क्षमा करने का मतलब प्यार दिखाना है और किसी के खिलाफ बुरी बातें याद नहीं रखना। जब परमेश्वर हमें माफ करते हैं, तो वे हमारे खिलाफ गलत बातें नहीं रखते।
महिमा	परमेश्वर की महिमा वह सब कुछ है जो परमेश्वर को सुंदर और महान बनाता है, एक महान राजा की तरह।
अनुग्रह	अनुग्रह परमेश्वर का उपहार है जो हमें नहीं मिलना चाहिए क्योंकि हमने बुरा किया है। अनुग्रह परमेश्वर देता है क्योंकि वह हमारे प्रति बहुत दयालु हैं। क्षमा* और मदद परमेश्वर की ओर से है।

दिल (हृदय) दिल एक व्यक्ति का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। इंसान का एक हिस्सा जो सोच, महसूस और चीजों का फैसला कर सकता है।

स्वर्ग स्वर्ग वह जगह है जहाँ परमेश्वर और मसीह हैं। परमेश्वर वहाँ रहते और राज्य करते हैं। स्वर्ग वह जगह है जहाँ, परमेश्वर और यीशु को सचमुच में जानने वाले लोग, मरने के बाद जाएँगे। वो जगह जहां लोग हमेशा खुश रहेंगे और कोई परेशानी नहीं होगी। नया आकाश और नई पृथ्वी, उन लोगों का भविष्य घर है, जो परमेश्वर को जानते हैं।

नरक नरक एक जगह है जहाँ परमेश्वर ने स्वयं से दुष्ट लोगों को अलग किया है। नरक मृत्यु के बाद दुष्ट लोगों के लिए सजा की जगह है।

पवित्र पवित्र होना मतलब परमेश्वर के लिए अलग होना। परमेश्वर की तरह होना। धार्मिक होना। जब हम पवित्र हैं तो हम निष्पाप हैं। हम परमेश्वर के सामने शुद्ध हैं।

पवित्र आत्मा परमेश्वर की आत्मा [आत्मा देखें] जिसे यीशु ने लोगों की मदद के लिए भेजा। पवित्र आत्मा परमेश्वर का दूसरा नाम है। इसके अलावा परमेश्वर का आत्मा, मसीह की आत्मा और मदद करने वाली आत्मा कहा जाता है। पवित्र आत्मा एक व्यक्ति हैं, लेकिन हमारे तरह मानव नहीं हैं। वो परमेश्वर हैं, पिता के साथ बराबर और परमेश्वर-पुत्र के साथ [त्रिएक भी देखें]। वह दुनिया में लोगों के बीच परमेश्वर का काम करते हैं। पवित्र आत्मा को कोई देख नहीं सकता पर वह उनके साथ और उनमे हमेशा रहते हैं जो यीशु को जानते हैं।

आदरणीय भला व्यवहार करना। अपने जीवन से परमेश्वर और मनुष्यों को आदर देना। एक ऐसा इंसान बनना जो भली और उचित बातें करता है।

प्रभु प्रभु बाइबल में परमेश्वर का नाम है। इसका मतलब है वह सब बातों के ऊपर हैं और सभी बातें के शासक हैं। एक नाम जो यीशु के लिए उपयोग करते हैं, जब हम उसकी आज्ञापालन करते हैं।

पश्चाताप करना पश्चाताप करना पाप* से मन फिराना है। वह करना जो परमेश्वर हमारे द्वारा करना चाहते हैं। यह तय करना कि अतीत में किए गए बुरी बातें फिर से नहीं करें।

पुनरुथान पुनरुथान का मतलब है मृतकों में से जी उठाना। वापस जीवित होना।

धर्मी धर्मी होने का मतलब है परमेश्वर के साथ सही होना। धर्मी वे है जो परमेश्वर के साथ सही है। जब परमेश्वर एक व्यक्ति को सही करता है, वो उस व्यक्ति को शुद्ध देखता है। एक धर्मी व्यक्ति परमेश्वर का दोस्त है और उनका दुश्मन नहीं।

बचाव/ उद्धार जब परमेश्वर हमे पाप की शक्ति * और परिणाम से बचाता है तब उसे उद्धार कहते हैं। बुरे कामों से बचाव या छुटकारा।

शैतान — शैतान* इब्लीस का दूसरा नाम है। शैतान* बुरे दूतों में सबसे दुष्ट है [स्वर्गदूत देखें]।

उद्धारकर्ता — यीशु मसीह उद्धारकर्ता है। एक व्यक्ति जो हमे परमेश्वर के पास लाता है और हमारे किये हुए बुरे कामों की सजा से छुड़ाता है।

पाप/ पापी — पाप परमेश्वर के खिलाफ या दूसरों के खिलाफ की हुई बुरी बातें है। जब हम परमेश्वर की दी हुई आज्ञा का पालन नहीं करते, हम पाप करते हैं। जब हम वो नहीं करते जो परमेश्वर चहाते है, वो पाप है। सारे लोग पापी है क्योंकि वे कार्य परमेश्वर के खिलाफ या दुसरे लोगों के खिलाफ करते हैं। सारे लोग पापी है क्योंकि सब बुरे इच्छाओं के साथ पैदा हुए हैं।

प्राण — प्राण व्यक्ति का वो भाग है जिसे हम देख नहीं सकते हमारे जीवन काल के दौरान हमारे अन्दर है, और मरने के बाद भी वो जीवित रहेगा। परमेश्वर आदम और हव्वा को प्राण दिए थे जब उनमे जीवन का श्वास फूंका। एक व्यक्ति का प्राण कभी कभी उसका आत्मा भी कहा जाता है [आत्मा देखे]।

आत्मा — आत्मा एक प्राणी है जिसके पास शारीर नहीं है और कोई देख नहीं सकता। परमेश्वर आत्मा है। परमेश्वर और भी आत्माओं (स्वर्गदूत*) को बनाए जो हम देख नहीं सकते और वो भले या बुरे हो सकते हैं। एक व्यक्ति का प्राण कभी कभी उसका आत्मा भी कहा जाता है [प्राण देखे]।

भरोसा — भरोसा रखने का मतलब हैं किसी के पीछे चलना जिन्हें हम सच्चा समझते हैं। विश्वास* रखना और विश्वास* के साथ कार्य करना [विश्वास देखे]।

कुंवारी/कुंवारा — जो व्यक्ति किसी के साथ यौन सम्बन्ध नहीं किया है उसे कुंवारी/कुंवारा कहते हैं।

निम्नलिखित प्रश्नोत्तरी इसे तैयार करने में उपयोगी थे:

●द वेस्टमिनिस्टर शोर्टर कैटेकिस्म
●द हाइडलबर्ग कैटेकिस्म
●अ स्माल कैटेकिस्म बाय मार्टिन लूथर
●द जिनीवा कैटेकिस्म बाय जॉन कैल्विन
●कैटेकिस्म फॉर यंग पीपल, पब्लिश बाय हयेस टाउन चैपल इवैंजेलिकल चर्च, मिडिलसेक्स, इंग्लैंड
●कैटेकिस्म फॉर यंग चिल्ड्रेन, पब्लिश बाय रेफोर्मेड बैप्टिस्ट चर्च ऑफ़ ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन
●द कैटेकिस्म फॉर यंग चिल्ड्रेन विथ कार्टून्स, पब्लिश बाय विक लोक्क्मन, रमोना, कैलिफ़ोर्निया
●स्पर्जन्स कैटेकिस्म, पब्लिश बाय वर्ड ऑफ़ ट्रुथ पब्लिशिंग, कैण्टन, जॉर्जिया
●द शोर्टर कैटेकिस्म: अ बैप्टिस्ट वर्शन, पब्लिश बी सिम्पसन पब्लिशिंग कंपनी, बून्टन, न्यू जेर्सी
●अ कैटेकिस्म पब्लिश बाय बी बॉब जोंस यूनिवर्सिटी प्रेस, ग्रीनविल्ल, साउथ कैरोलिना
●क्राइस्ट माय ओनली कम्फर्ट: द हाइडलबर्ग फॉर बैप्टिस्ट, पब्लिशर अननोन